Issue-74, Vol-02, March 2021

Printing Area

International Peer Reviewed Referred Research Journal

ISSN 2394-5303

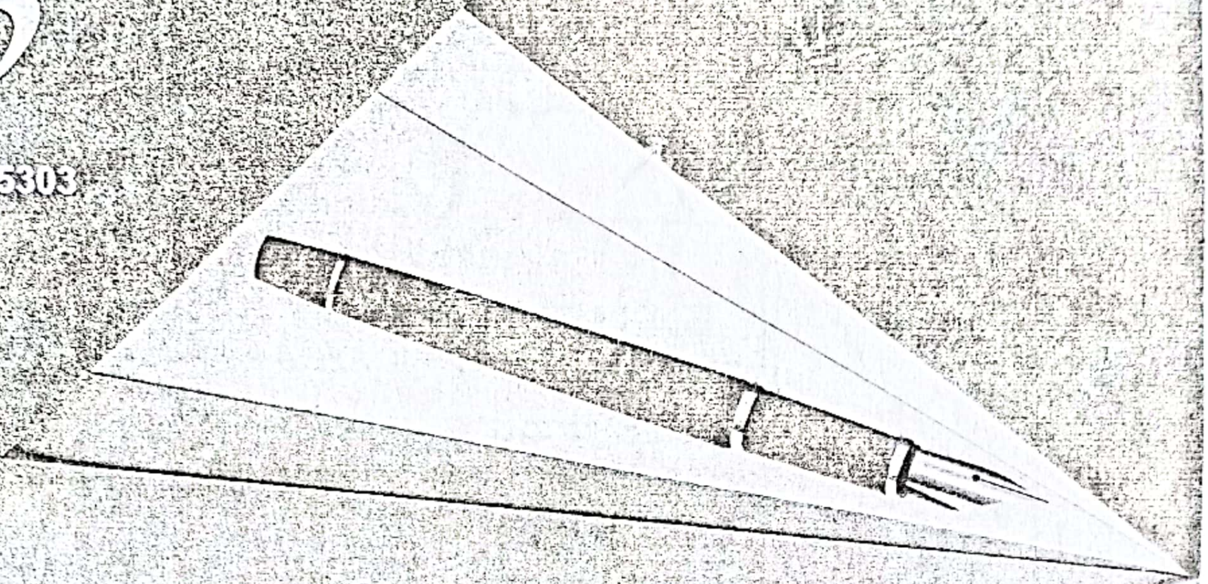

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

40] नारी जीवन की साहसिक गाथा 'अन्या से अनन्या'
प्रो. डॉ. अनिता नेरे, प्रा. रविंद्र पुंजाराम ठाकरे, नागपुर ||158

41] शास्त्रीय संगीत में तानपुरा
अनीता शर्मा ||161

42] डॉ. राम मनोहर लोहिया की प्रासंगिकता
DR-SURENDRA SINGH YADAV ||164

43] भूमि सुधार एवं कृषि यंत्रीकरण एक भौगोलिक अध्ययन ...
डॉ. सतीशचन्द्र, परसोंन, एटा (उ.प्र.) ||167

44] भारत--श्रीलंका सम्बन्ध : प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी.....
डॉ. अखिलेश कुमार यादव ||171

http://www.printingarea.blogspot.com

शक्तियों का स्वाभाविक परिणाम था जो भारत के जनमानस में सागर की तरह उमड़ रही थी और जो कबीर तथा नानक जैसे संतों की वाणी में मुखरित हो रही थी।'' इस प्रकार प्रेम, सत्य, गुरुभक्ति, ईश्वर में विश्वास और साधना ऐसे माध्यम थे जिनकी सभी पंथों में मान्यता थी, तथा समाज इससे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित अवश्य हुआ।

वर्तमान परिपेक्ष्य में भी भक्ति आंदोलन उसके उदार एवं समानता के भावों के कारण प्रासंगिक है। यह हमें सारे धार्मिक व जातिगत बंधनों से ऊपर उठकर एक साथ आने का संदेश देता है चाहे, हम ईश्वर की सगुण भक्ति करें अथवा निर्गुण,परंतु उसकी भक्ति के मार्ग में सामाजिक बुराइयों को तजकर प्रेम, समानता एवं आपसी–सौहार्द को ह्रदय से आत्मसात करें।

संदर्भ ग्रंथ :

१) मंडोत एवं सैनी, भारतीय संस्कृति के मूल आधार, पृष्ठ संख्या ६५– ७७

२) एलपी माथुर, भारत का इतिहास (१००० से १७०७ ईस्वी), हिमांशु पब्लिकेशंस उदयपुर, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या १६६ –१८३

३) डॉ. कमलेश शुक्ला, डीपी द्विवेदी, डॉ बसु बंधु दीवान, युगबोध इतिहास, युगबोध प्रकाशन, रायपुर पृष्ठ संख्या २०६– २०९

४) भारतीय इतिहास के कुछ विषय, कक्षा १२ एनसीईआरटी पृष्ठ संख्या १४० से १४७

५) कुंडलियां रूप जी पत्र,पृष्ठ १८९–२१७

६) संपादक : हरीश चंद्र वर्मा, मध्यकालीन भारत, भाग १ (७५० से १५४० ईसवी) पृष्ठ ४३५ से ४४८

7) wikipedia-org

8) www-historydiscussion-net

9) viralfacts of india-com

10) satyavijayi-com

11) byjus-com ¼ map½

12) ganeshaspeaks-com

□□□

40

नारी जीवन की साहसिक गाथा 'अन्या से अनन्या'

प्रो. डॉ. अनिता नेरे.
एस.पी.एच. महिला महाविद्यालय,
मालेगांव कैम्प, जि. नाशिक

प्रा. रविंद्र पुंजाराम ठाकरे
अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, नामपुर, तह – बागलाण, जि – नाशिक.

****

२१ वीं सदी की नारी की ओर देखकर लगता है कि अब तो नारी को कोई मुक्त करे या ना करे वह खुद इस बंधन से मुक्त होना चाहती है। नारी का यह प्रतिरोध साहित्य में भी स्पष्ट रूप में दिखाई देने लगा है। साहित्य की विविध विधाओं में आत्मकथा एक प्रामाणिक और पारदर्शी विधा है। अनेक महिला लेखिकाओं – मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भंडारी, कृष्णा अग्निहोत्री, सुशीला टाकभौरे आदि ने आत्मकथा लिखकर अपने भाव, विचार, व्यवहार को अभिव्यक्ति दी है। इन आत्मकथाओं में उनका जीवन प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में उभरा है। अब उन्होंने पुरानी मान्यताओं और रूढी–परंपराओं को तोडने का प्रयत्न किया है। अपने जीने के तौर–तरीकों को खुद ढूंढने लगी है। इन आत्मकथा लेखिकाओं ने अपने दु:ख – दर्द एवं पीड़ा को वाणी दी है "महिला के संघर्ष की बात उसी की जुबानी अधिक विश्वसनीयता प्रदान करती है। उसकी संवेदना को और उजागर करती है।" (१) लेखिकाओं ने बिना किसी संकोच के अपनी कहानी निर्भीकता से अभिव्यक्त करना शुरू किया। अब तक दु:ख, प्रवंचना, अपमान, अत्याचार की पीडा को चुपचाप भोगने वाली

Scanned with OKEN Scanner

महिलाओं ने आत्मकथा लेखन के जरिए अपनी दुख भरी दास्ताँ को बयान करना शुरू किया। तब से इस लेखन से सामाजिक न्याय के पुकार की गुंज उठी। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में कुसुम अंसल की 'जो कहा नहीं गया', कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नहीं है दिल मेरा'', पद्मा सचदेव की' बूँद बावड़ी', कौशल्या बैसंत्री की' दोहरा अभिशाप, मैत्रेयी पुष्पा 'कस्तुरी कुण्डल बसै' 'गुडिया भीतर गुडिया' रमणिका गुप्ता की' हादसे' मन्नू भंडारी की 'एक कहानी यह भी, चंद्रकिरण सौनरेक्सा की 'पिंजरे की मैना, सुशीला टाकभोंरे की' शिकंजे का दर्द 'अमृता प्रीतम की' रसीदी टिकट 'आदि आत्मकथाएँ हिंदी साहित्य मे उल्लेखनीय रही हैं। इसमें इन लेखिकाओं ने स्त्री जन्म पाने के कारण बचपन से लेकर बुढापे तक जो भोगा, सहा उसका लेखा – जोखा बेखौफ होकर आत्मकथाओं में शब्दबद्ध किया है।

इसी श्रृंखला में एक और नाम जुडता है बहुमुखी प्रतिभा की धनी प्रभा खेतान का। हिंदी जगत में प्रभा खेतान एक ऐसा नाम है जो अपनी पहचान कई स्तर पर दर्ज कर चुका है। स्त्री सशक्तिकरण तथा स्त्री अस्मिता की लड़ाई लडने वाली लेखिका के रूप में हिंदी जगत उन्हें जानता है। साथ ही एक सफल उद्योगपति महिला के रूप में उन्होंने देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज की है। प्रभात खेतान का अधिकांश लेखन आत्मकथनात्मक है । मारवाडी समाज की दकियानूसी पारंपरिक संकीर्णता के बीच उनका नारी मन जिस प्रकार विद्रोह करता है, अपनी अस्मिता और आजादी की लड़ाई लड़ता है, हिंदी जगत में विलक्षण है। 'अन्या से अनन्या' शीर्षक से आत्मकथा लिखकर उन्होंने अपने जीवन की संघर्ष गाथा को प्रस्तुत कर नारी में हो रहे बदलाव को अभिव्यक्त किया है। साठ वर्ष की आयु में अर्थात सन २००७ में प्रभाजी ने आत्मकथा लिखी और एक वर्ष बाद ही उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कहा। मानो वह निधन से पहले अपने जीवन की सच्चाई को समाज के सम्मुख रखना चाहती थी।

प्रभा खेतान का जन्म कलकत्ता के एक पारंपरिक व्यापारी मारवाडी परिवार में हुआ था जिसमें लडकी का जन्म लेना पाप समझा जाता था। प्रभा खेतान पाँचवी बेटी थी। उनके जन्म से माँ खुश नहीं थी तथा वह बीमार रहने लगी। उनके घर में पैसे की कमी नहीं थी पर प्यार की कमी जरूरत थी। प्रभाजी को कैसे असहाय और अनाथ बचपन बिताना पडा उन्हीं के शब्दों में -- कैसा अनाथ बचपन था । अम्मा ने कभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं। चुपचाप घंटों उनके कमरे के दरवाजे पर खडी रहती। शायद अम्मा मुझे भी तर बुला ले। शायद हाँ, शायद अपनी रजाई में सुला ले। मगर नहीं, एक शाश्वत दूरी बनी रही हमेशा हम दोनों के बीच।"(२) उन्हें माँ से प्यार नहीं मिला पर उनकी कमी दाई माँ ने पूर्ण कर दी। प्रभाजी पिता की लाडली थी पर उनके नौ साल की अवस्था में ही पिता का निधन हुआ। नौ वर्ष की कच्ची कली को बड़े भाई विजय ने कुचल डाला। यह बात प्रभा जी ने दाई माँ से कही किंतु लोकलाज वश दाई माँ ने उसे चुप रहने के लिए कहा।

सभी विपरीत परिस्थितियों का सामना करते –करते प्रभा खेतान एम. ए. कर पीएच. डी. करती है। २२ साल की उम्र में डॉक्टर सराफ के संपर्क में आती है डॉक्टर सराफ कलकत्ता में आँख के बड़े प्रसिद्ध डॉक्टर थे। प्रभा खेतान आँखें दिखाने गई और उनकी आँखों में खो गई। डॉक्टर सराफ शादीशुदा थे और ५ बच्चों के पिता। फिर भी प्रभा खेतान उनसे प्रेम करने लगी। उन दोनों की उम्र में बडा अंतर होने से डॉक्टर सराफ बार–बार इस बात का जिक्र करते है लेकिन प्रभा जी पर इसका कोई असर नहीं पडता। उनके अनुसार,'प्यार दिमाग से नहीं हृदय से किया जाता है और हृदय से यदि हम कुछ करते हैं तो ज्यादा सोचने –समझने की जरूरत नहीं ।"(३) और वह आत्मसमर्पण कर देती है। लेकिन कुछ दिनों के बाद पता चलता है कि डॉक्टर सराफ एक पत्नीव्रता नहीं है फिर भी लेखिका उन्हें छोड नहीं पाती । एक समय ऐसा आता है कि वह डॉक्टर के बच्चे की माँ बनती है लेकिन उसे गर्भपात कराना पडता है क्योंकि वह अविवाहित थी। प्रभाजी खुलकर अपने आपको डॉक्टर सराफ की प्रेमिका घोषित करती है। स्वयम्

Scanned with OKEN Scanner

एक अत्यंत सफल, संपन्न, दृढ संकल्पी महिला परम्परागत रवैल का ढाँचा तोडती है। क्योंकि वह डॉक्टर सराफ पर आश्रित नहीं है।

प्रभाजी परंपरा को तोडना चाहती है किंतु उन्हें यह भी मालूम है कि यह इतना आसान भी नहीं। नारी मुक्ति का समर्थन करने के बावजूद वह कहती है -- संस्कार से, परंपराओं से मुक्ति की यात्रा बहुत लंबी है और बडी कठीन। पीढ़ियों से स्त्री की जो छबि बन चुकी है, उसको बदलने की शायद मेरे पास भी शक्ति नहीं है। व्यावहारिक स्तर पर अपनी रणनीति विकसित करने के लिए जरूरी है कि स्त्री --पुरुष के बीच कुछ मौलिक अंतर को ध्यान में रखा जाए। जिस प्रकार धन सीमित है उसी प्रकार व्यक्ति की ऊर्जा भी। स्त्री को भी अपनी ऊर्जा का निवेश बहुत सोच -- समझकर करना चाहिए।"(४) अपने व्यवसाय के लिए उन्हें देश--विदेश अकेले घुमना पडता है। प्रभाजी जैसी मारवाडी लड़की के लिए यह बहुत बडा कदम था। वह हॉलीवुड से ब्युटी थेरपी का कोर्स करके कलकत्ता में अपना ब्युटी पार्लर खोलती है। उस समय इस प्रकार के व्यवसाय प्रारंभ करना बहुत बड़ी चुनौती थी। इसके पश्चात वह चमड़े का निर्यात प्रारंभ करती है। उनके इस कार्य के कारण इंडिया टुडे में उनकी फोटो छपती है। उन्हें डायनामिक महिला माना गया। आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रभाजी के जीवन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसी आर्थिक आत्मनिर्भरता ने मारवाडी समाज जो उन्हें यह कहते हुए मंचासीन नहीं देखना चाहता था कि इसकी देखा -- देखी हमारी बहू बेटियाँ बिगडेंगी नहीं? और कल को वे भी किसी से उलझ जाए तो? इस औरत को हम मंच पर कैसे बिठाएँ? माना की पढी -- लिखी, आत्मनिर्भर स्त्री है पर ऐसी स्त्री समाज की नाक नहीं बन सकती।" (५) उसी समाज ने दो साल बाद कलकत्ता चेंबर ऑफ कॉमर्स की प्रथम महिला अध्यक्ष बनाया लेकिन इस परिवर्तन के दौरान लेखिका को अनेक प्रकार के संघर्षों से गुजरना पडा है।

लेखिका की व्यथा यह है कि उनकी अम्मा, भाभी, चाची, माँ जैसी शिक्षिका रोने के लिए पैदा हुई है। मन्नू भंडारी की जीवन त्रासदी को उकेरते हुए वे स्पष्ट शब्दों में लिखती है,"गलत पुरुष के साथ विवाह करने पर स्त्री कितनी असहाय हो जाती है" (६) पर प्रभाजी को उनके गुरु डॉक्टर चटर्जी की बात अच्छी तरह से याद है ," स्त्री होना कोई अपराध नहीं है। आँसू भरी नियति स्वीकारना बडा अपराध है। अपनी नियति को बदल सको तो वह एकलव्य की गुरुदक्षिणा होगी। (७) सचमुच प्रभाजी ने अपनी स्थिति को बडी जीवट के साथ बदला। विवाह को ओवररेटेड संस्था मानते हुए बेबाक शब्दों में वे कहती है,"मेरी राय में विवाह एक ओवररेटेड संस्था है। मैं इस संस्था को ज्यादा तरजीह देने से इंकार करती हूँ। फिर जो कुछ भी है वह मेरे और डॉक्टर साहब के बीच है ,बिलकुल हमारा निजी कोनासात्र, बर्ट्रेंड रस्सल सभी तो इस संस्था की आलोचना करते है।" (८) इससे स्पष्ट है कि स्त्री अब विरोध करने लगी है, खुलकर प्रतिरोध करने लगी है। नारी जागरण के कारण उसकी सोच में बदलाव आया है। लेखिका के शब्दों में," मुझे अपने स्त्रीपन से चिढ़ हो रही थी। आखिर हम स्त्रियाँ अपने प्रिय पुरुष की अहं संतुष्टि के लिए खुद का अवमूल्यन क्यों करती है? किस लिए गुलाम की तरह पुरुष की हर मूर्खता एवं कुंठा को झेलती रहती है। मै आखिर क्यों और किसलिए बर्दाश्त करूँ? क्या मैं मेहनत नहीं करती ?क्या मैं पैसे नहीं कमाती? (९) प्रभाजी अपने मैं को जागृत करने के लिए पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध करती है, विद्रोह करती है। इस बारे में वे सोचती है मेरा जीवन ही ऐसा था क्योंकि मैं पितृसत्ता के ओछेपन, दमन, दुराचार को किसी भी किमत पर स्वीकार नहीं कर पा रही थी। स्त्री -- पुरुष की जिन असमानताओं को देखते हुए मैं बड़ी हो रही थी वे सभी तो पितृसत्ताक के कारनामे थे ।"(१०)

आत्मकथा का अंत अत्यंत भावुक और संवेदनशील हुआ है। स्त्री को लेकर समाज कितना निष्ठुर है, यह बात डॉक्टर सराफ की शोक सभा में पता चलता है। डॉक्टर सराफ का निधन कैंसर की बीमारी से होता है। प्रभा जी उनकी देखभाल करती है। लेकिन जिंदगी भर जिस व्यक्ति को प्रेम करती रही ,उसके परिवार को संभाला उसी डॉक्टर सर्राफ के परिवार के लोग उनके शव के फेरे लगाते है और प्रभा

Scanned with OKEN Scanner

जी उनकी मृत्यु के आघात से आहत हो उसी भीड़ में अकेली एक कोने में अकेली खड़ी रहती है। वहां के लोग उसे घूमती हुई नजर से देखते हैं। वह रो भी नहीं सकती केवल फूलों की माला उनके पैरों पर रखकर चल देती हैं। उनकी शोक सभा में कोई भी प्रभा जी का जिक्र तक नहीं करता वह अनन्या बन कर रह गई। लेखिका कहती है उनकी स्मरण सभा में उन्हें कई रूपों से संबोधित और याद किया गया। कलकत्ता के वरिष्ठ नागरिक समाजसेवी, सफल डॉक्टर पीछे पत्नी और बच्चों को छोड़कर गए है। प्रभा खेतान नामक स्त्री का कहीं भी जिक्र नहीं था।' (११) लेखिका यहां बताना चाहती है कि हमारे समाज में पुरुष जितना भी पाप करें उस पर किसी का ध्यान नहीं जाता। सब लोग स्त्री को ही दोषी ठहराते हैं। समाज के इस क्रूर सच को उन्होंने हमारे सामने रखा है। इतना होने पर भी वह अपनी अलग पहचान बनाती है।

कुल मिलाकर नारी विमर्श से संबंधित साहित्य में प्रभा खेतान की यह आत्मकथा अग्रगण्य मानी जाती है क्योंकि इसमें नारी अस्मिता की प्रस्थापना हुई है और उसे स्वावलंबी बनाकर खुले आकाश में विचरण करने दिया है। निश्चय ही यह नारी जीवन पर वैश्विक दृष्टि से प्रकाश डालने वाली अप्रतिम कृति है।

संदर्भ:

१) हिंदी आत्मकथा – डॉ सविता सिंह पृ. २१६

२) अन्या से अनन्या – प्रभा खेतान पृ. ३१

३) अन्या से अनन्या –प्रभा खेतान पृ. ८०

४) अन्या से अनन्या – प्रभा खेतान पृ.२५६

५) अन्या से अनन्या-- प्रभा खेतान पृ. १९८

६) अन्या से अनन्या प्रभा खेतान पृ. ४५

७) अन्या से अनन्या –प्रभा खेतान पृ. ६३

८) अन्या से अनन्या –प्रभा खेतान, पृ. ८५

९) अन्या से अनन्या – प्रभा खेता, पृ . २१३

१०) अन्या से अनन्या --प्रभा खेतान, पृ. २५९

११) अन्या से अनन्या -- प्रभा खेतान, पृ २८७

41

शास्त्रीय संगीत में तानपुरा

अनीता शर्मा

****

शोध सारांश

वीणा, हारमोनियम, ड्रम, तानपुरा, गिटार एवं बाँसुरी न जाने कितने ही वाद्य यंत्र के विषय में हम जानते हैं। इनमें से 'तानपुरा' भारत के लोकप्रिय वाद्य यंत्रों में से एक है जिसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत के लिए किया जाता है। शास्त्रीय संगीत में तानपुरा प्राचीन काल से ही एक लोकप्रिय वाद्य यंत्र माना जाता है। इसके बिना संगीत गायन पूर्णतः अधूरा है। प्रस्तुत शोध पत्र में तानपुरा के महत्व, प्रकार, इसकी बनावट और अंगों पर चर्चा की गई है। वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा ने भारतीय संगीत पद्धति को और भी सहजता प्रदान की है। तानपुरा के स्वरूप में परिवर्तन के बाद भी इसका प्रयोग निरंतर संगीतवादक कर रहे हैं और इसका भविष्य निरंतर प्रगति की और नये--नये रूपों के साथ विकास की और अग्रसर हो रहा है।

संगीत में गायन, वादन एवं नृत्य तीनों कलाएँ होती हैं। जिसमें वादन श्रेणी में तत्त वाद्य, सुषिर वाद्य, घन वाद्य तथा अवनध वाद्य आते हैं। शास्त्रीय संगीत गायन में तत्त वाद्य ''तानपुरा'' की बड़ी विशेषता है। इसके बिना शास्त्रीय संगीत अधूरा है। जिस तरह सांस के बिना आत्मा का कोई वजूद नहीं है, ठीक उसी तरह तानपुरा के बिना शास्त्रीय संगीत का गायन अधूरा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक तानपुरा वाद्य यंत्र का प्रयोग होता आया है और यह आज भी निरंतर चल रहा है। जैसे आपने ऊपर देखा कि तानपुरा शास्त्रीय संगीत में कितना महत्वपूर्ण है, इसकी क्या विशेषता है। इसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है :– जिस प्रकार प्राचीन संगीत में एक तंत्री वीणा स्वर गुंजित

Scanned with OKEN Scanner